आर. एन. आई - राजहिन/2003/9899 डाक पंजीयन संख्या - श्रीगंगानगर/105/2012-2014

मासिक पत्रिका

अजायब बानी

वर्ष : नौंवा | अंक : ग्यारहवां | मार्च-2012

e-mail : dhanajaibs@yahoo.co.in Website : www.ajaibbani.org

5 **गुरु की याद**
(गुफा दर्शनों से पहले एक संदेश)

11 **परमात्मा सबके अंदर है**
(वारां - भाई गुरदास जी)
सतसंग - परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज
(रीबोला, इटली)

21 **सवाल-जवाब**
परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा
प्रेमियों के सवालों के जवाब

25 **नशा छोड़ें**
परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा
प्रेमियों को एक संदेश

संपादक
प्रेम प्रकाश छाबड़ा
मो. 099 50 55 66 71
098 71 50 19 99

उप संपादक
नन्दनी

विशेष सलाहकार
गुरमेल सिंह नौरिया
मो. 099 28 92 53 04

अनुवादक
मास्टर प्रताप सिंह

संपादकीय सहयोगी
रेनू सचदेवा
सुमन आनंद
ज्योति सरदाना
परमजीत सिंह

सन्त बानी आश्रम - 16 पी.एस., वाया- मुकलावा, तहसील - रायसिंहनगर - 335 039, जिला श्रीगंगानगर (राजस्थान)

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक व सम्पादक : प्रेम प्रकाश छाबड़ा के आदेशानुसार प्रिन्ट टुडे श्री गंगानगर से छपवाकर 1027 अग्रसेन नगर, श्रीगंगानगर -335 001 (राजस्थान) से प्रकाशित किया।

प्रकाशन दिनांक 1 मार्च 2012 **- 120 -** **मूल्य - पाँच रुपये**

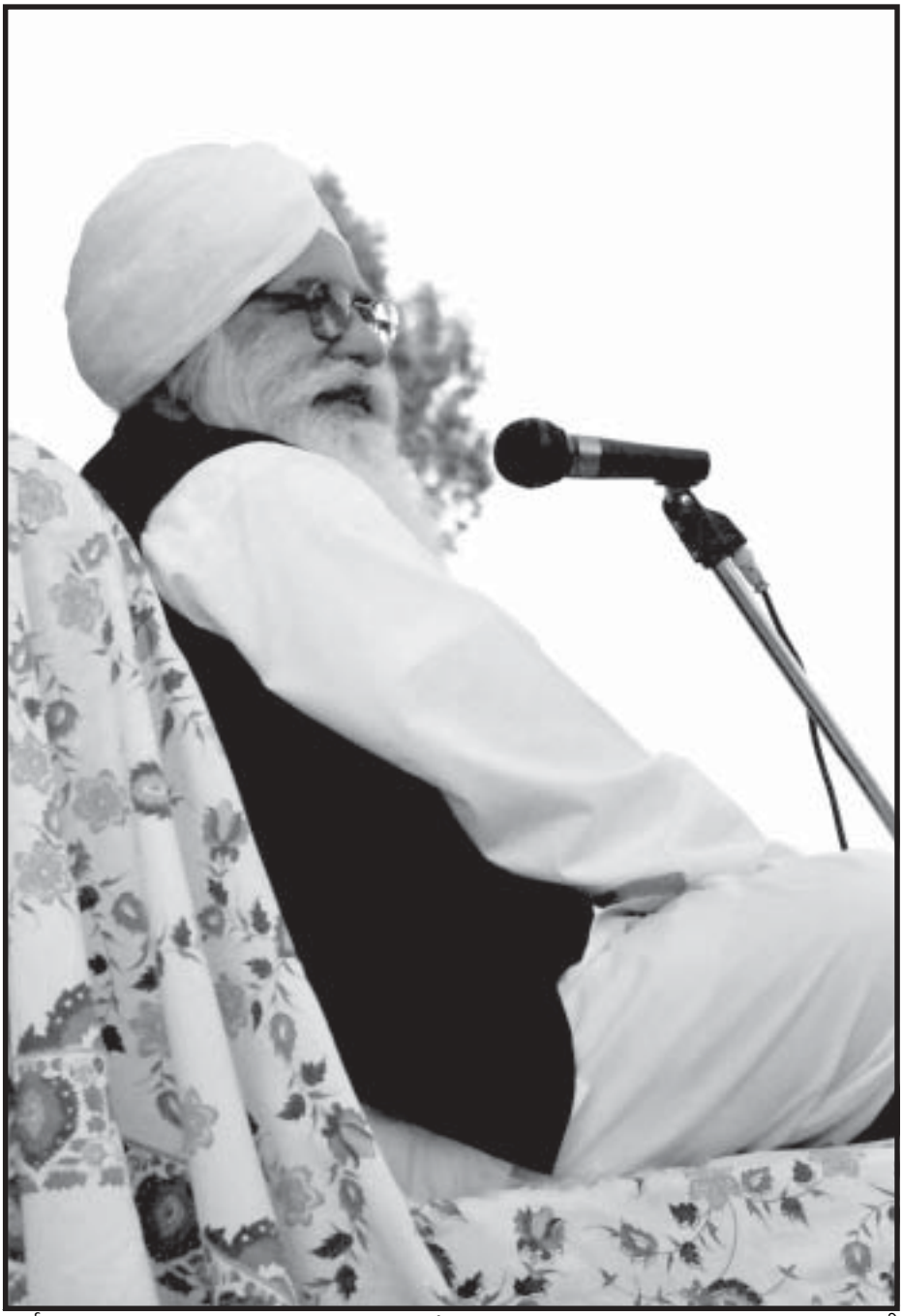

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा गुफा दर्शनों से पहले एक संदेश

गुरु की याद

(16 पी. एस. आश्रम, राजस्थान)

इस जगह के बारे में आपने बहुत कुछ सुना है कि महाराज जी ने यहाँ पर आकर इस सोई हुई आत्मा को अपना प्यार देकर जगाया।

भाई गुरदास जी गुरमत में आकर अमली रूप में सच्चखंड पहुँचे। आपको गुरु अमरदेव जी, गुरु रामदास जी, गुरु अर्जुनदेव जी और गुरु हरगोविंद जी की सेवा करने का मौका मिला। आपने अपने जीवन में कई उतार-चढ़ाव देखे। आप निधड़क थे, आपने सच्चाई को माना। आप मजबूत रहे आपने अपनी ज़िंदगी में गुरुओं की सेवा की और 'नाम' की कमाई की।

उस समय हिन्दुस्तान में आने-जाने के खास साधन नहीं थे फिर भी आपने तकरीबन सात सौ आदमियों को नाम दिलवाया, सोई हुई आत्माओं को गुरु के साथ जोड़ा। आप अपने तजुर्बे में लिखते हैं, ''सतसंगी को मजबूत होना चाहिए, जीवित महापुरुष की संगत को सतसंग कहा गया है। जीवित महापुरुष के चरणों में बैठने से हमारी आत्मा जाग जाती है।''

आप प्यार से कहते हैं, ''बचपन से लेकर बुढ़ापे तक औरत-मर्द, सुखी-दु:खी, गरीब-अमीर सबके लिए सतसंग जरूरी है। जिसने अपने ऊपर रहम करना है वह जीवित महापुरुष की संगत में जाए।'' गुरु नानक साहब कहते हैं:

जहं सतगुरु तहं सतसंग बनाई।

महात्मा संसार में आकर अपना सतसंग जारी करते हैं और दया करके हमें यह भी इज़ाजत देते हैं, ''मैं जब मौजूद न रहूँ तो सब प्रेमी इकट्ठे बैठकर सतसंग की बातें करें।''

हम गुरु भाई जहाँ भी इकट्ठे होकर गुरु चर्चा करते हैं गुरु के बारे में सोचते हैं भजन-अभ्यास भी करते हैं इसे सतसंग ही कहा जाता है। हमें वहाँ गुरु की मौजूदगी महसूस होती है जिससे हमारा बहुत फायदा होता है क्योंकि **गुरु की याद** ही सब कुछ होती है लेकिन सबकी एक जैसी सोच नहीं होती; सबके ख्याल एक जैसे नहीं होते इसलिए सबकी एक जैसी तरक्की नहीं होती।

संगत में कई कमाई वाले प्रेमी भी होते हैं कई प्रेमी अंदर भी जाते हैं। खरबूजे को देखकर खरबूजा रंग पकड़ता है जिन प्रेमियों के अंदर उत्साह नहीं होता दूसरे प्रेमियों को देखकर उनके अंदर भी उत्साह पैदा हो जाता है। वे भी नाम की कमाई की तरफ लग जाते हैं। गुरु रामदास जी कहते हैं:

बिन संगत कर्म करे अभिमानी, कढ पानी चीकड़ पावे हो।

सतसंग के बिना हम जो भी शुभ कर्म करते हैं वे इस तरह हैं जैसे हम साफ पानी को कीचड़ में डाल रहे हैं। लोहा काठ की संगत करके तर जाता है इसी तरह चाहे हमने कितने भी बुरे कर्म क्यों न किए हों! सन्तों की संगत में आकर हमें उत्साह मिलता है। हम अपनी गलतियों को सुधारने की कोशिश करते हैं, नाम जपने लग जाते हैं, पवित्र इंसान बन जाते हैं। गुरु साहब कहते हैं:

मेरे माधो जी सतसंग मिले सो तरेया।
गुरु प्रसाद परम पद पाया सूखे काष्ट हरेया।

जैसे सूखा हुआ काठ हरा हो जाए तो यह बड़ी अचरज बात है लेकिन उसके लिए भी उम्मीद है इसी तरह हमारी आत्मा जन्म-जन्मांतरों से खुष्क हो चुकी है, कमजोर हो चुकी है।

भाई गुरदास जी एक रानी की कथा बता रहे हैं। हिन्दुस्तान में काफी समय राजा-महाराजाओं का राज्य रहा है। उन महाराजाओं ने बहुत सुख के साधन अपनाए हुए थे। राजा हरिश्चन्द्र के घर में

सब सुख व ऐशो-ईशरत के सामान थे। उसके घर में तारा रानी आई जिसकी किस्मत में नाम और सतसंग था। रानी को सतसंग बहुत अच्छा लगता था। रानी सारे सुख व ऐशो-आराम छोड़कर सतसंग में जाया करती थी।

वह ऐसा समय था जब रानी अपने शरीर का कोई भी अंग बाहर नहीं निकाल सकती थी। उस समय संगत में जाना बड़ा ही मुश्किल था लेकिन प्यार, प्यार होता है। वह लोक-लाज की परवाह नहीं करती थी। राजा ने उसे रोकना चाहा वह फिर भी नहीं रूकी। वह रात को उठकर संगत में चली जाती थी।

सुखु राजे हरीचंद घरि नारि सु तारा लोचन राणी।
साध संगति मिलि गावंदे राती जाइ सुणै गुरबाणी।

भाई गुरदास जी कहते हैं कि एक रात तारा रानी के कानों में शब्दों की आवाज पड़ी, प्रेमी गा रहे थे। तारा रानी ने लोक-लाज की परवाह नहीं की वह रात को उठकर संगत में चली गई। रानी मस्त होकर गुरु यश के शब्द बोल रही थी।

पिछै राजा जागिआ अधी राति निखंडि विहाणी।
राणी दिसि न आवई मन विचि वरति गई हैराणी।

राजा की नींद खुली उसने बिस्तर खाली देखा, वहाँ रानी नहीं थी। राजा बहुत हैरान हुआ कि मेरे महलों में तो चिड़िया भी पर नहीं मारती। राजा परेशान हुआ कि जवान उम्र है रानी कहाँ चली गई!

होरतु राती उठि कै चलिआ पिछै तरल जुआणी।
राणी पहुती संगती राजे खड़ी खड़ाउ नीसाणी।

अगली रात राजा सोने का नाटक करके अंदर से जागता रहा। रानी ने भी जल्दी-जल्दी सेवा करके राजा को सुला दिया। राजा लेटते ही नकली खर्राटे मारने लगा। रानी महलों से निकल पड़ी,

उसके पीछे-पीछे राजा भी चल पड़ा। रानी गुरु प्यार में मस्त थी। राजा ने सोचा! अगर मैंने इससे पूछा कि रात को कहाँ गई थी तो यह नहीं मानेगी इसलिए राजा निशानी के तौर पर रानी की खड़ाव उठाकर ले आया।

साधसंगति आराधिआ जोड़ी जुड़ी खड़ाव पुराणी।
राजे डिठा चलितु इहु एह खड़ाव है चोज विडाणी।

पहले समय में राजा के मुँह से निकला हुआ शब्द कानून बन जाता था, फाँसी से कम सजा नहीं होती थी। जब रानी संगत में से उठी तो उसने देखा कि मेरी खड़ाव नहीं है। रानी बहुत परेशान हुई। रानी ने संगत से विनती की कि हम सब मिलकर गुरु के आगे अरदास करें कि वह मेरी लाज रखें। रानी को अपनी चिंता नहीं थी वह यह सोच रही थी कि गुरु की बदनामी होगी। संगत ने मिलकर गुरु के आगे अरदास की। सुनने वाला भी दूर नहीं होता वह हमारे अंदर ही होता है। वैसी ही खड़ाव बन गई, रानी उस खड़ाव को पहनकर महल में वापिस आ गई।

सुबह उठकर राजा ने रानी से पूछा, ''तुम रात को कहाँ गई थी?'' रानी ने कहा, ''मैं तो आपके पास ही सोई हुई थी।'' फिर राजा ने पूछा, ''तुम्हारी खड़ाव कहाँ है?'' रानी ने कहा कि मेरी खड़ाव तो मेरे पास है। रानी के पास खड़ाव देखकर राजा बहुत परेशान हुआ। राजा ने कहा, ''यह खड़ाव नहीं, यह तो प्रभु की करामात है।'' राजा तसल्ली कर चुका था कि रानी अच्छी तरफ लगी हुई है। आखिर वह भी मालिक की तरफ लग गया। संगत का असर हर किसी पर होता है।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''पीर नहीं उड़ते उनके शिष्य ही उन्हें उड़ाते हैं। शिष्य जितने अच्छे होंगे उतनी ही गुरु की तारीफ होगी। सच्चा शिष्य बुराई करने से पहले सोचता है कि मेरे

गुरु की निन्दा होगी अगर मैं गुरु की निन्दा का कारण बना तो इससे ज्यादा मेरा बुरा कर्म क्या होगा?''

जब हम सच्चे-सुच्चे बनकर अरदास करते हैं तो परमात्मा जरूर सुनता है। इसी तरह इस जगह पर गरीब अजायब ने सच्चे-सुच्चे दिल से अरदास की। इस जगह पर ही महाराज जी ने इस गरीब की आँखो पर हाथ रखकर कहा, ''इन्हें अंदर खोलना है और अंदर ही देखना है।''

उस समय मेरे सच्चे दिल से यही आवाज निकली कि काल का राज्य है, काल बड़ा जबरदस्त है इसकी फौजें बड़ी दमदार हैं। मेरी यही माँग है कि आप मेरी लाज रखना और अपना प्यार देते रहना। महाराज जी अपने जीवन काल में अपने वचन पर चलते रहे और आज भी अपना वचन निभा रहे हैं, खुले दिल से प्यार दे रहे हैं।

मैं प्यार का पुजारी था मेरी माँग प्यार ही थी। आप प्यार का समुंद्र थे। मैंने आपके आगे अपने भजन-अभ्यास की नुमाईश नहीं की। मेरी आपके आगे सच्चे दिल से यही विनती थी कि मैं एक तिनका हूँ आप पहाड़ हैं; मैं कतरा हूँ आप समुद्र हैं। मैं पापी हूँ आप पापियों को बख्शने वाले हैं अगर मैं पाप न करता तो आप किसे बख्शते? मैं तिल-तिल का अपराधी हूँ, मैं आपके दर पर आया हूँ; आप मुझे बख्श दें।

सच्चे दिल से अरदास करने का ढ़ंग भी वह खुद ही बख्शता है। हम तो दुनियां की चीज़ें ही माँगते हैं। हम गुरु के पास जाकर कहते हैं कि हम अच्छे हैं, बड़े अभ्यासी हैं हमारे जैसा कोई नहीं।

प्यारेयो! जो गुरु को समझ लेते हैं उनके दिल से स्वाभाविक ही सच्ची-सुच्ची अरदास निकलती है उन्हें पता लग जाता है कि हमारी ज़िंदगी बनाने वाला गुरु ही है। ज़िंदगी में अगर कोई अच्छी चीज़ है तो वह गुरु है, नाम है। गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैं:

जे ते नीर समुंद्र सागर भरया, ते ते अवगुण हमारे।
दया करो कुछ मेहर उपावो डुबदे पत्थर तारे।

इसका मतलब यह नहीं कि उन्होंने पाप किए हुए थे। सन्त संसार में मालिक के हुक्म में आते हैं, वे पवित्र होते हैं और हमें भी पवित्र बनाने के लिए आते हैं। हमारे अंदर अहंकार है, सन्त हमें नम्रता सिखाने के लिए ही संसार में आते हैं।

सन्त हमें बताते हैं कि हम जिस संसार में रह रहे हैं यह अहंकार का देश है। मालिक का रास्ता बहुत बारीक है आप मन को उसके आगे लाकर खड़ा करें लेकिन हमारा मन तो हाथी बनकर खड़ा हुआ है; यह बाल के दसवें हिस्से में से कैसे निकलेगा? गुरु मार्ग में मैं-मेरी छोड़नी पड़ती है और गुरु गुरु करना पड़ता है।

राजा डिठा चलितु इहु एह खड़ाव है चोज विडाणी।
साधसंगति विटहु कुरबाणी। साधसंगति विटहु कुरबाणी।

अब राजा भी कहता है, ''मैं ऐसे सन्तों की संगत पर कुर्बान जाता हूँ जहाँ जाकर मन को शान्ति मिलती है।'' संगत में आकर अपराधी अपराध छोड़ता है, शराबी शराब छोड़ता है और कामी काम से तौबा कर लेता है। सतसंग ही ऐसी जगह है जहाँ हमें हमारी गलतियों की जानकारी होती है और हमें अपने आपको सुधारने की समझ आती है।

***

सतसंग - परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

परमात्मा सबके अंदर है

वारां - भाई गुरदास जी

रीबोला - इटली

मैं पिछले कई दिनों से भाई गुरदास की बानी पर सतसंग कर रहा हूँ, आज भी भाई गुरदास की बानी पर सतसंग दे रहा हूँ। आप इस बानी को ध्यान से सुनें।

परमात्मा को जानने के दो तरीके हैं सिमरन और भजन। जो मुक्ति प्राप्त करना चाहता है उसे पूर्ण सतगुरु से 'नाम' लेना बहुत जरूरी है। जो सेवक इस मार्ग में तरक्की करना चाहता है उसका सतगुरु में श्रद्धा और विश्वास भी जरूरी है। सभी सतगुरुओं ने हमें मौजूदा गुरु के पास जाने के लिए जोर दिया है।

स्वामी जी महाराज कहते हैं, ''मैं आपके भले के लिए कहता हूँ कि मौजूदा सतगुरु को ढूंढें।'' गुरु नानकदेव जी कहते हैं, ''गुरु के बिना घोर अंधेरा है, गुरु के बिना कुछ समझ नहीं आता।'' हम लापरवाह हो जाते हैं, हम कह देते हैं कि हमें गुरु की क्या जरूरत है लेकिन गुरु के बिना हम कुछ भी नहीं सीख सकते।

शुरू में हमारी माता हमारी गुरु होती है। हम जिस परिवार में पैदा होते हैं वह हमें परिवार की बोली सिखाती है। जब थोड़े बड़े होते हैं तो हमारे भाई-बहन हमें चलना सिखाते हैं। जब और बड़े होते हैं तो स्कूल में अध्यापक हमें पढ़ाते हैं, वह हमारे गुरु होते हैं। बाद में जब हम कालेज जाते हैं तो प्रोफेसर हमारे गुरु होते हैं। उसके बाद जब दुनियां में कदम रखते हैं कोई व्यापार करते हैं या नेता बनते हैं तब भी हमें किसी मार्गदर्शक की जरूरत होती है।

हमें सदा ही किसी न किसी गुरु की जरूरत पड़ती है जो हमारी मदद करता है, हर कदम पर हमारा मार्गदर्शन करता है।

परमात्मा को जानना रूहानी मार्ग पर चलना मुश्किल है। पूर्ण गुरु के मार्गदर्शन के बिना हम इस मार्ग पर एक कदम भी नहीं चल सकते। हम गुरु के मार्गदर्शन के बिना दुनियां में कुछ भी प्राप्त नहीं कर सकते लेकिन रूहानी मार्ग के लिए हम कह देते हैं कि हमें गुरु की जरूरत नहीं।

चाहे सन्त-महात्मा सतगुरु संसार में कहीं भी पैदा हुए हों वे मनुष्य का तन धारण करके ही आए। सभी महान सन्त गुरु नानकदेव जी, कबीर साहब, ईसा मसीह और दूसरे सन्त इंसानी जामें में आए। अगर परमात्मा पशु के रूप में आता तो हम उसकी भाषा न समझ सकते अगर वह फरिश्ते, देवी-देवता के रूप में आता तो हम उसे देख नहीं सकते थे क्योंकि हम इंसानी जामें में हैं; इसलिए परमात्मा इंसानी जामें में आता है। कबीर साहब कहते हैं:

ब्रह्म बोले काया के ओले, काया बिन ब्रह्म क्या बोले।

महात्मा हमें बताते हैं कि हम बाहर की आँखों से देख सकते हैं फिर भी हमें किसी मार्गदर्शक या गुरु की जरूरत है। इस संसार को छोड़ने के बाद हमने जिस रास्ते पर चलना है उस रास्ते के बारे में हम कुछ नहीं जानते वहाँ घोर अंधेरा है। उस रास्ते पर चलने के लिए हमें अंदर की आँखें खोलनी होंगी। सन्त-सतगुरु संसार में डॉक्टरों की तरह हमारी आँखें खोलने के लिए आते हैं।

महाराज कृपाल कहा करते थे, ''जो बच्चा आज पैदा होता है उसे माता के दूध और देखभाल की जरूरत होती है। जो बच्चा सदियों पहले पैदा हुआ उसे भी माता के दूध और देखभाल की जरूरत थी जो बच्चा आने वाले समय में पैदा होगा उसे भी माता के दूध और देखभाल की उतनी ही जरूरत होगी जितनी आज के बच्चे को है।''

ऐसा नहीं कि परमात्मा ने पिछले समय में ही आत्माओं पर दया की वर्षा की। परमात्मा सदा यही चाहता है कि आत्माएं वापिस

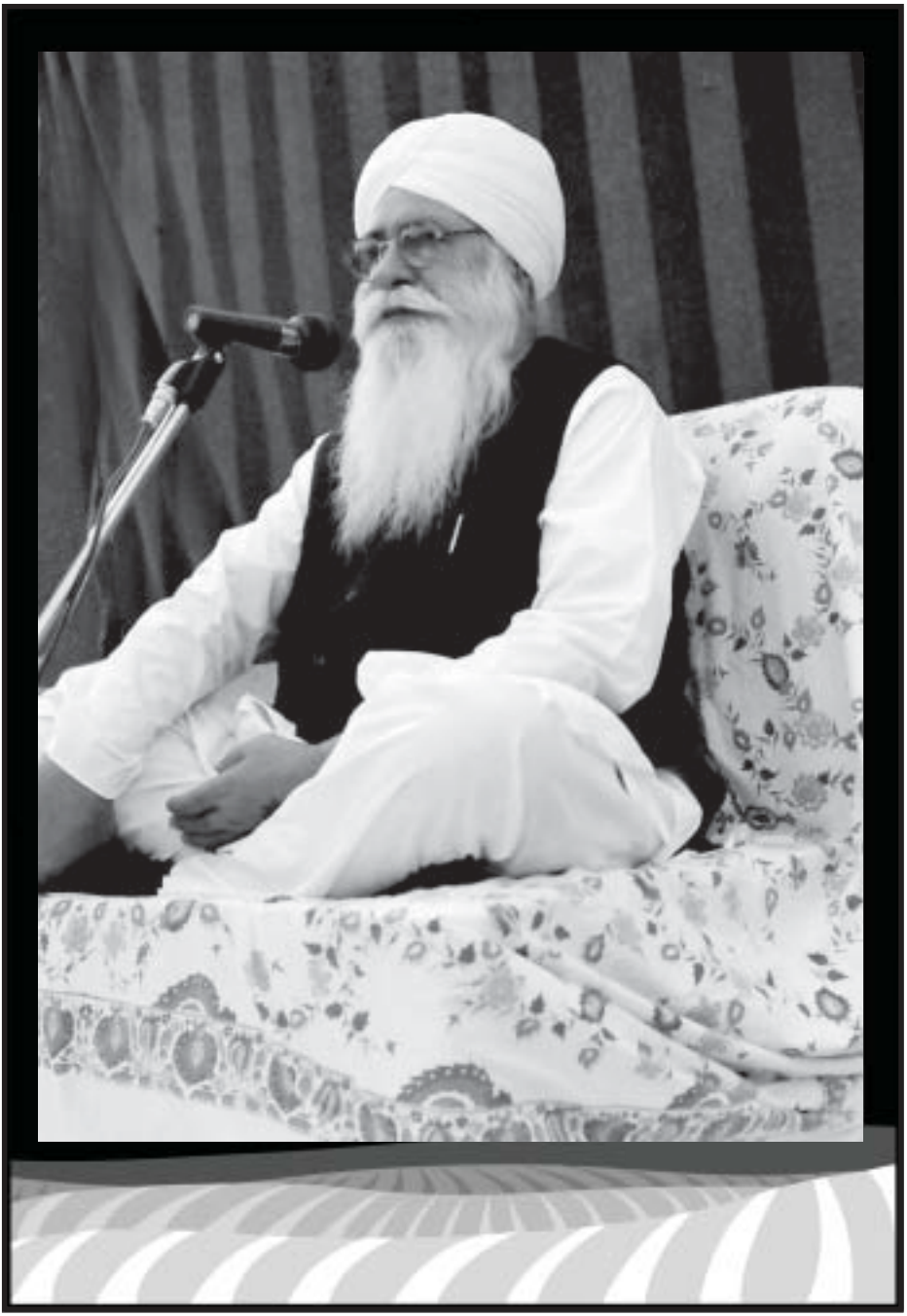

अपने घर जाएं। परमात्मा आज भी अपने प्यारे सन्त-महात्माओं को संसार में भेज रहा है। सन्तों का मार्ग कभी बंद नहीं होता।

कबीर साहब कहते हैं, ''सन्तों का मार्ग सदा चलता रहता है सतगुरु सदा संसार में आते हैं। जो लोग परमात्मा की भक्ति नहीं करते वे कहते हैं कि इस समय संसार में कोई गुरु नहीं है।''

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''वक्त की चीज़ ही काम आती है। बेशक धनवंतरी और लुकमान बहुत बड़े वैद्य थे, वे मरे हुए को भी जिन्दा कर सकते थे अगर आज हम बीमार हो जाएं और यह कहें कि हम धनवंतरी और लुकमान से ईलाज करवाएंगे तो यह नहीं हो सकता क्योंकि वे संसार छोड़ चुके हैं। हम चाहे कितनी भी कोशिश कर लें वे संसार में वापिस नहीं आ सकते अगर हमें अपना ईलाज करवाना है तो वक्त के वैद्य के पास जाना पड़ेगा।''

अगर कोई औरत सदियों पहले आए अच्छे राजा से शादी करवाना चाहे तो उसकी यह इच्छा पूरी नहीं हो सकती क्योंकि वह राजा वापिस नहीं आ सकता अगर वह शादी करवाना चाहती है तो उसे वक्त के पति की तलाश करनी होगी।

इसी तरह संसार में बहुत से गुरु और विद्वान आ चुके हैं अगर हम शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तो हमें वक्त के गुरु की जरूरत है। पहले समय में जो सतगुरु आए वे बहुत भले और पूजनीय थे। परमात्मा रूप थे लेकिन वे संसार में बार-बार उस रूप में नहीं आएंगे। हम उनका आदर करते हैं अगर अब हमने रूहानी मार्गदर्शन प्राप्त करना है तो हमें वक्त के गुरु के पास जाना होगा।

सन्त हमें बताते हैं कि हम शरीर नहीं आत्मा हैं। यह शरीर हमें कर्मों का भुगतान करने के लिए मिला है, हम सब आत्माएं हैं। हमारी आत्मा पर स्थूल, सूक्ष्म और कारण तीन पर्दे हैं। सन्त दया करके हमें नाम देते हैं, अभ्यास करवाते हैं। सन्त इन तीन पर्दों को

हटाने में हमारी मदद करते हैं और हमें दसवें द्वार ले जाते हैं। वहाँ हमारी आत्मा नूर से भर जाती है; वहाँ आत्मा का नूर बारह सूर्यों के प्रकाश के समान हो जाता है।

दसवें द्वार में पहुँचकर हमारी आत्मा नूर से भर जाती है फिर भी आत्मा आगे का सफर खुद तय नहीं कर सकती। आगे जाने के लिए गुरु के प्रकाश की जरूरत होती है। दसवें द्वार में पहुँचकर आत्मा को पता लगता है कि वह शरीर नहीं है।

महासुन्न मंडल में घोर अंधकार होता है उस घोर अंधकार को सतगुरु की दया और सतगुरु के प्रकाश से ही पार किया जा सकता है। वहाँ ऐसी बहुत सी आत्माएं भटक रही हैं जिन्होंने सतगुरु के बिना महासुन्न मंडल को पार करने की कोशिश की। महासुन्न मंडल को पार करने पर ही आत्मा को सतगुरु की असलियत का पता लगता है।

सारे हिन्दु शास्त्र और कई पवित्र ग्रन्थ गुरु की महिमा के बारे में बताते हैं। हिन्दु शास्त्रों में यह लिखा है कि वही गुरु है जो अंधेरे में प्रकाश कर दे। गुरु शरीर नहीं है वह सर्वशक्तिमान है। हमें समझाने के लिए गुरु इंसानी जामा धारण करता है।

महात्मा अंधविश्वास में विश्वास नहीं करते और न ही अपने सेवकों को अंधविश्वास देते हैं। वे अपने सेवकों से कहते हैं, ''हमारे साथ अंदर चलकर सच्चाई को अपनी आँखों से देखो।'' वे जब अपने बहुत से सेवकों को अपनी शिक्षा पर चलते हुए नहीं देखते तो दुनियावी मिसालें देकर उन्हें सच्चाई का ज्ञान करवाते हैं।

महात्मा सदा यही आशा करते हैं कि एक नहीं तो दूसरी मिसाल शिष्य के हृदय को छू जाएगी और वे हमें जो समझाना चाहते हैं हम समझ जाएंगे। वे हमारे दिल पर सूक्ष्म बुद्धि का असर डालते हैं तो हमारे अंदर 'नाम' जपने की इच्छा जागती है।

आप मिस्टर ओबराय की किताब पढ़कर देखें! जिसमें महाराज कृपाल ने भाई सुंदरदास को झूठे गुरुओं के बारे में बताया है कि झूठे गुरुओं को कैसी सजाएं मिलती है। जो आत्मा पूर्ण गुरु के बिना अंदर जाती है उसके साथ क्या होता है, उसे क्या दंड मिलता है?

भाई सुंदरदास पहुँचा हुआ अभ्यासी था। महाराज कृपाल ने उसे मेरे आश्रम में सैंकड़ो लोगों के सामने अभ्यास में बिठाया। वह जो कुछ अंदर देख रहा था उसे बताने के लिए कहा गया था।

मैं अक्सर कहा करता हूँ अगर आप अंदर जाएं तो कोई शक नहीं रहता, रास्ता किताब की तरह खुल जाता है। आप महासुन्न में जाकर देख सकते हैं कि जो लोग इस संसार में मशहूर थे, जिनकी पुस्तके भी मशहूर थी वे भी वहाँ जाकर अटक गए।

महाराज कृपाल कहा करते थे, ''पुस्तक लिखना मन और बुद्धि का काम है। मन और बुद्धि अज्ञानी हैं। जहाँ मन और बुद्धि की सीमा समाप्त होती है वहाँ से रूहानियत की शुरूआत होती है।''

आप कबीर साहब का अनुराग सागर पढ़कर तसल्ली कर सकते हैं। भाई गुरदास जी ब्रह्मा के कर्मों के बारे में बता रहे हैं कि ब्रह्मा बहुत बड़ा ज्ञानी था, ब्रह्मा के चार मुख थे। ब्रह्मा से ही लोगों को वेदों का ज्ञान हुआ। वह लोगों को शिक्षा दिया करता था कि बुरे कर्म नहीं करने चाहिए। किसी की पत्नी की तरफ नहीं देखना चाहिए लेकिन वह खुद ही ललचा गया गिर गया और फिर उसने पश्चाताप किया। ब्रह्मा का यही दोष था कि उसे पूर्ण गुरु नहीं मिला था। वह सतसंग में नहीं गया था उसे अहंकार था कि वह बहुत बड़ा ज्ञानी है।

गुरु नानकदेव जी कहते हैं, ''ब्रह्म, विष्णु और महेश किसी भी देवता को शान्ति नहीं मिली। सतगुरु के पास जाए बिना किसी को शान्ति नहीं मिलती।''

गुरु गोविंद सिंह जी प्यार से कहते हैं कि चाहे कोई हजारों उपाय कर ले! चाहे लाखों मंत्रों का जाप कर ले! फिर भी कोई काल की मार से नहीं बचता केवल नाम को जपने वाले भक्त अभ्यासी ही बचेंगे। आप अपने गुरु से कहते हैं, ''हे सतगुरु! जो आपकी शरण में आकर नाम का आसरा ले लेते हैं वे ही बचते हैं। जो दाने चक्की की किल्ली के पास रहते हैं वही दाने बचते हैं बाकी दाने पिसकर आटा बन जाते हैं। जो पूर्ण गुरु की शरण ले लेते हैं वे बच जाते हैं बाकी के काल द्वारा चबा लिए जाते हैं।''

हउ तिस दै चउखंनीऐ गुर परमेसरु एको जाणै।
हउ तिस दै चउखंनीऐ दूजा भाउ न अंदरि आणै।

भाई गुरदास जी कहते हैं, ''मैं चार टुकड़े होकर उस शिष्य पर कुर्बान जाता हूँ जो गुरु और परमेश्वर को एक ही समझता है।'' जिन महात्माओं ने भजन-अभ्यास में सख्त मेहनत की इस शरीर से ऊपर उठकर अंदर गए; परमात्मा को देखने के बाद उन्होंने कहा कि गुरु और परमेश्वर एक है।

प्यारेयो! गुरु और परमेश्वर एक है अंदर जाकर स्वयं देखें कि परमात्मा ही गुरु का तन धारण करके संसार में आता है। गुरु अर्जुनदेव जी महाराज कहते हैं:

सन्तन स्यों मेरी लेवा देवी सन्तन स्यों व्यवहार।
सन्त हमारी ओट सताणी सन्त हमारा गहना।
सन्तन मोको पूँजी सौंपी उतरयो मन का धोखा।
धर्मराय अब कहा करोगे जो फाटयो सगला लेखा।

हम सतगुरु के चरणों की धूल हैं; हमने गुरु के चरणों का आसरा लिया हुआ है। सन्त ही हमारा सहारा और गहने हैं। आप इस संसार में नाम जपने के लिए आए हैं। आपको परमात्मा का नाम सन्तों से ही मिल सकता है। अहंकार को छोड़ें सच और झूठ

में अंतर समझे। पूर्ण सतगुरु से 'नाम' लें और उस नाम को अपने हृदय में बसाएं।

हउ तिस दै चउखंनीऐ अउगुणु कीते गुण परवाणै।
हउ तिस दै चउखंनीऐ मंदा किसै न आखि वखाणै।

भाई गुरदास जी कहते हैं, ''मैं अपने शरीर के चार टुकड़े करके उन शिष्यों पर कुर्बान जाता हूँ चाहे कोई उनका बुरा करता हो लेकिन वे उसका भी भला ही करते हैं।'' आप जानते हैं कि जो आपके लिए भले हैं उनके लिए भला होना आसान है लेकिन जो आपका बुरा करते हैं उनके लिए भला बनना कितना मुश्किल है।

प्यारेयो! इस संसार के लोगों ने सन्तों और उनके सेवकों को बहुत कष्ट दिए। गुरु अर्जुनदेव जी महाराज को गैर इंसानी तरीकों से कष्ट दिए गए। आपने जब तक देह नहीं त्यागी आपको गर्म तवे पर बिठाया गया, आपके सिर में गर्म रेत डाली गई। इसी तरह गुरु तेग बहादुर का दिल्ली में लोगों के सामने कत्ल किया गया। मंसूर का कत्ल हुआ और शम्स तबरेज की खाल उतारी गई। ईसा को काँटो का ताज पहनाकर सूली पर चढ़ा दिया गया।

जब इन पूर्ण सतगुरुओं को कष्ट दिए गए तो इन्होंने कष्ट देने वालों का बुरा नहीं किया। इन्होंने परमात्मा के आगे विनती की, ''हे परमात्मा! ये लोग हमें नहीं पहचानते इन्हें पता नहीं कि ये क्या कर रहे हैं? आप इन्हें क्षमा करें।''

जब मैंने अपने प्यारे सतगुरु से कहा, ''हे सच्चे पातशाह! आप सर्वगुण सम्पन्न हैं फिर भी लोगों ने आपकी निन्दा की। मुझमें कोई गुण नहीं, मैं संसार का सामना कैसे करूंगा?'' सच्चे पातशाह महाराज कृपाल ने कहा, ''प्यारे! अगर बुरा आदमी बुरा काम नहीं छोड़ता तो क्या भला आदमी भला काम छोड़ देगा?''

हउ तिस दै चउखंनीऐ आपु ठगाए लोका भाणै।

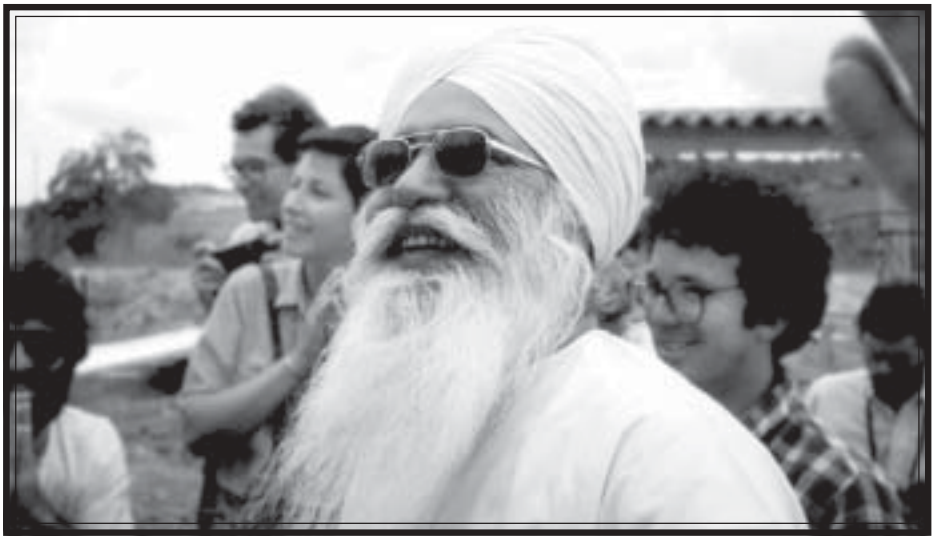

अब आप कहते हैं, ''परमात्मा सबके अंदर है **अगर हम किसी को कष्ट देते हैं तो हम परमात्मा को ही कष्ट दे रहे होते हैं क्योंकि परमात्मा सबके अंदर है। जो दूसरों को ठगने की कोशिश करते हैं वे खुद ही ठगे जाते हैं।**''

हउ तिस दै चउखंनीऐ परउपकार करै रंग माणै।
लउबाली दरगहि विचि माणु निमाणा माणु निमाणै।
गुर पूरा गुर सबदु सिआणै।। गुर पूर गुर सबदु सिआणै।।

अब भाई गुरदास जी कहते हैं, ''जो दूसरों के परोपकार के लिए काम करता है वही गुरु का शिष्य है। दूसरों की भलाई करने वाला शिष्य गुरु में समा जाता है।''

भाई गुरदास जी ने हमें प्यार से समझाया कि हमने नाम की कमाई करनी है, नाम मुक्ति का साधन है; हमने गुरु का हुक्म मानना है। अब हमें 'नाम' मिल गया है हमें प्यार के सागर में गोता लगाकर नाम का मोती बाहर निकालना चाहिए।

***

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब

सवाल-जवाब

एक प्रेमी : *आपने कहा था कि गुरु एक निगाह से लाखों लोगों को तार देता है, दुनियां में बहुत कम गिनती के लोग हैं जो आपकी संगत में आए हैं जिन्हें यह मौका मिला है। आपने यह भी कहा था कि काल आत्माओं को निचले जामों में भेजकर उन्हें खाता रहता है। जो लोग सन्तमत में नहीं आए जिन्हें आपके बारे में कोई जानकारी नहीं उनके लिए क्या उम्मीद है ?*

बाबा जी : कबीर साहब के अनुराग सागर में काल और दयाल के भेद के बारे में लिखा है। आप उसे पढ़कर तसल्ली कर सकते हैं। हर आत्मा का समय निर्धारित है कि इसने कब सन्तों के पास जाना है, कब नाम प्राप्त करना है। जैसे हम सुख-दुख, अमीरी-गरीबी अपने कर्मों के मुताबिक भोगते हैं। उसी तरह कुदरत का नियम है कि दिन-रात बिना किसी की मदद के अपने आप ही निकलते हैं इसी तरह हर जीव का समय निर्धारित है कि कब उसका संसार से जन्म-मरण समाप्त होगा ?

मैं कई बार हरनाम सिंह की कहानी बता चुका हूँ कि उसे 'नाम' नहीं मिला था। उसने मेरे गांव से पचास मील दूर अबोहर में महाराज कृपाल के चलती कार में दर्शन किए थे। हरनाम सिंह नीची जाति का आदमी था, नशे वगैरह भी इस्तेमाल किया करता था। उसने जब मनमोहने दशर्न किए तो हुजूर कृपाल उसकी आँखों में बस गए। उसने बिना किसी मदद के सब नशे छोड़ दिए। उसे हुजूर पर भरोसा आ गया।

जब उसका अंत समय आया वह मेरे ही खेत में फसल काट रहा था। उस समय खेत में और भी चालीस-पचास आदमी काम कर रहे थे। अचानक उसने कुछ घबराहट महसूस की तो उसका लड़का भागता हुआ मेरे पास आया और उसने कहा कि पता नहीं मेरे पिता जी को क्या हो गया है ? मैं वहाँ गया मैंने उससे प्यार से पूछा कि हरनाम सिंह क्या बात है ? हरनाम

सिंह ने कहा, ''मैंने जिस ताकत का आपके आगे जिक्र किया था वह मुझे हवाई जहाज पर लेने आए हैं और एक साल बाद यहाँ आपके पास आएँगे।'' कोई और भी हरनाम सिंह वाली आँखें बना ले! अगर कृपाल एक हरनाम को तार सकते हैं तो वे लाखों लोगों को भी तार सकते हैं।

मैं जब दिल्ली आता हूँ पाँच सौ किलोमीटर का सफर तय करना पड़ता है। सफर में कई तलाशी लेने वाले भी मिलते हैं और कई नमस्कार करने वाले भी मिलते हैं। हम न तलाशी लेने वालों को कुछ बताते हैं कि हम ठग, चोर या बदमाश नहीं और न ही दूसरों को बताते हैं कि हम शरीफ इंसान है। यह अपना-अपना बर्तन, अपनी-अपनी आत्मा का शीशा है।

मैं अपनी एक घटना बताया करता हूँ कि मैं जीप में दिल्ली से राजस्थान जा रहा था। उस दिन बहुत गर्मी थी। सिरसा आकर हमारा बर्फ लेने का विचार हुआ। जो मेरे साथ थे वे बर्फ लेने चले गए। बाजार में बहुत से आदमी मेरे पास से गुजर रहे थे। उनकी मेरी तरफ कोई तवज्जों नहीं थी और न ही उनमें से किसी ने मुझे नमस्कार की। एक आदमी काफी दूर दुकान पर बैठा था, वह वहाँ से उठकर मेरे पास आया और उसने पूछा, ''आपने कहाँ जाना है, आप कौन हैं? मुझे आपकी शक्ल ने खींचा है।'' मैंने उससे ज्यादा बात नहीं की जानकारी के लिए उसे मैगज़ीन दे दी।

अच्छी आत्मा को 'शब्द' अपने आप ही कशिश प्रदान करता है। आँख की महानता के बारे में सब सन्तों ने बहुत कुछ ब्यान किया है।

हमारे सतगुरु महाराज कहा करते थे, ''आँख ही आँख को देती है। लेकिन हम जीव अंदर नहीं जाते अगर हम अंदर जाए तो हमें पता लगे कि सन्तों की दृष्टि के कितने फायदे हैं और उनकी दृष्टि से हमारी कितनी सफाई हो रही है और हम मालिक के कितने नज़दीक पहुँच रहे हैं।'' मैं अक्सर कहा करता हूँ:

नैन ललारी नैन कसुंबा, नैन नैना नू रंगदे।
इक नैन नैना दी करन मजदूरी ते मेहनत मूल न मंगदे।

सन्त-सतगुरु संसार में बड़ी खुली नजर और खुला दिल लेकर आते हैं अगर सारा संसार श्रद्धा लेकर आए तो वे सारे संसार को ही लेकर जा सकते हैं लेकिन हम जीव किसके कर्म लाएं? कबीर साहब, गुरु नानक साहब हमारे सतगुरु महाराज कृपाल और बड़ी-बड़ी चोटी के महात्मा संसार में आए लेकिन गिनती के लोगों ने ही उनसे फायदा उठाया।

महाराज सावन सिंह जी सतसंग में बताया करते थे कि उनकी रिश्तेदारी में एक चाचा लगते थे, उनकी पत्नी को नाम मिला हुआ था। वह हमेशा कहती थी, ''डेरे चलो, सतसंग सुनो और महाराज जी से नाम लो।'' लेकिन चाचा को लोक-लाज थी कि मैं रिश्तेदारी में सावन सिंह जी से बड़ा हूँ इसलिए वह कोई न कोई बहाना बनाकर कहते मुझे कुछ काम है अगले महीने चलेंगे। जब उनकी मौत आई तो उन्होंने अपनी पत्नी से कहा, ''यमदूत मेरा शरीर जला रहे हैं, मेरे हाथ भी जला रहे हैं।'' पत्नी ने कहा, ''मैं तुमसे कहती थी कि इनसे बचाने वाले के पास चलो लेकिन तुम कभी नहीं गए।''

मेरा एक सगा भाई था। वह सदा ही बाबा बिशनदास और महाराज कृपाल के खिलाफ रहा। मैंने हमेशा उसे भरोसा दिलाने की कोशिश की लेकिन उसने मुझे वहाँ से हटाने की कोशिश की। महाराज कृपाल के समय में भी हमारा काफी संघर्ष चलता रहा, हम कभी भी प्यार से इकट्ठे नहीं बैठते थे। मैं परमार्थ की बात करता था और वह उसे सुनने के लिए तैयार

नहीं था। एक दिन वह बाहर से घर आया, वह बिल्कुल बीमार नहीं था। बैठते ही कहने लगा, ''चार कसाई आ गए हैं और उन्होंने मुझे पकड़ लिया है।'' घरवालों ने पूछा कि कसाई कैसे हैं ? उसने बताया कि कसाईयों की शक्ल कसूर के कसाइयों जैसी है। अब तो कसूर का इलाका पाकिस्तान में हैं। कसूर के कसाई पंजाब में मशहूर होते थे फिर वह जल्दी ही कहने लगा, ''महाराज कृपाल आ गए है और उन्होंने मुझे छुड़ा लिया है।''

आखिर चोला छोड़ते समय उसने अपनी फैमिली से कहा कि मुझसे तो गलती हो गई है लेकिन आप सब 'नाम' के बिना मत रहना फिर उसके सारे परिवार ने आकर नाम लिया। जो भरोसे वाले सतसंगी हैं उनके रिश्तेदार बेशक उनकी बात सुनने के लिए तैयार नहीं, विरोधता भी करते हैं लेकिन मैं यह बात वायदे से कहता हूँ कि सतसंगी का पक्षी भी इंसानी जामे से नीचे नहीं जाएगा आखिर उसका भला भी होगा क्योंकि कहीं न कहीं वे भी दिल में सोचते हैं कि हमारा रिश्तेदार जिसकी बात करता है वह कुछ तो है।

मैं जब पश्चिम जाता हूँ तब वहाँ कई सतसंगियों के रिश्तेदार और उनके माता-पिता भी मुझे देखने के लिए आ जाते हैं। वे आकर मुझसे कहते हैं कि हम आपको मानते नहीं सिर्फ देखने के लिए आए हैं। बेशक उनकी बोल बानी कैसी भी हो आखिर उन्हें आना ही पड़ा क्योंकि उनके ऊपर सोहबत का असर होता है। मैं भी उनकी बात का बुरा नहीं मानता, मैं कहता हूँ कोई बात नहीं आप मुझे नहीं मानते लेकिन मैं तो आत्मा के कारण आपको मानता हूँ।

सतसंगी को मजबूत रहना चाहिए। सतसंगी खुद तर जाता है अपनी कुल को तार लेता है, पित्रों को भी तार लेता है। महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''मामूली सतसंगी की भी कुल तर जाती है और जो आला दर्जे के सतसंगी होते हैं उनकी तो कई कुलें तर जाती हैं।''

***

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा एक संदेश

नशा छोड़ें

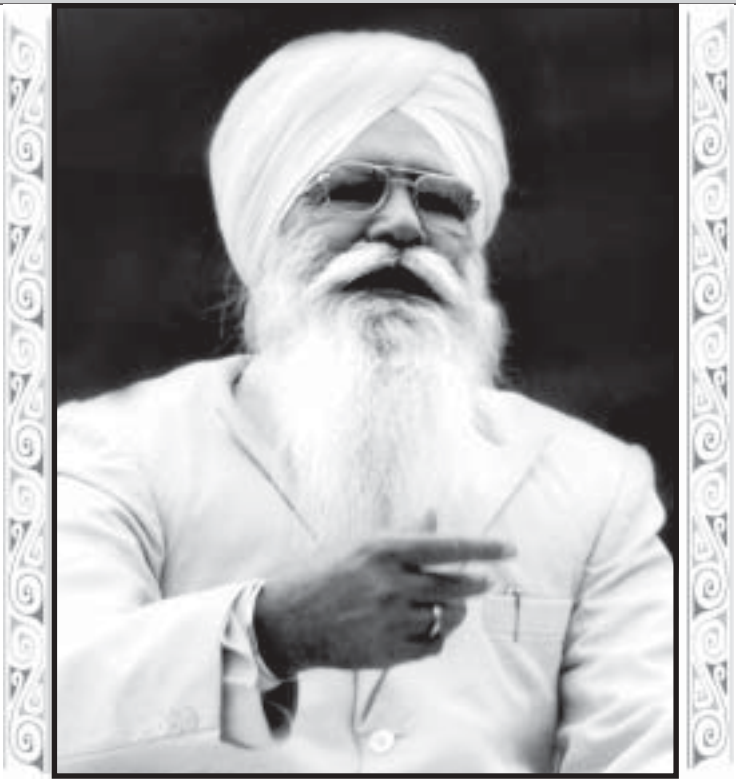

एक तरफ तो हम चाहते हैं कि 'शब्द' खुल जाए और दूसरी तरफ हम दुनियावी सुखों का त्याग करने के लिए तैयार नहीं हैं। हम शराब और दूसरी दुनियावी चीज़ों का आनन्द लेना चाहते हैं; हम उन्हें छोड़ने के लिए तैयार नहीं लेकिन चाहते हैं कि गुरु हम पर दया करे और 'शब्द' को खोले।

आप सबका स्वागत है। मैं आप सबको देखकर बहुत खुश हूँ। मुझे डेविड विगिनस ने आप सबके बारे में बताया है और मैं यह

जानकर बहुत खुश हूँ कि आप एक ऐसी मीटिंग में जा रहे हैं जहाँ पर शराब और बुरी आदतों को छोड़ने के बारे में सलाह दी जाती है। हम बुरी आदतों में तभी फँसते हैं जब हम बुरे लोगों की संगत में जाते हैं।

राजा-महाराजाओं की कहानियों से इतिहास भरा पड़ा है कि वे किस तरह के नशे करते थे। जो राजा-महाराजा बहुत अमीर हुआ करते थे उन्होंने नशे के कारण अपना सब कुछ बर्बाद कर दिया, उनका सब कुछ नष्ट हो गया और वे बहुत गरीब हो गए।

जब से यह रचना रची गई ऋषि-मुनि इस संसार में आए। ऋषि-मुनि और सन्त-सतगुरु ने कभी भी किसी को कोई नशीला पदार्थ इस्तेमाल करने की सलाह नहीं दी।

आप सभी ने अपने सहकर्मियों की मीटिंग में बहुत कुछ सुना होगा, मैं भी आपसे कुछ कहना चाहता हूँ कि जब हम किसी तरह के नशे का इस्तेमाल करते हैं तो उसका सबसे बुरा प्रभाव हमारी सोचने की शक्ति पर पड़ता है जिससे हमारा दिमाग कमजोर हो जाता है।

शुरु में जब हम किसी किस्म का नशा करते हैं तो हमें लगता है कि हम बहुत ऊँची लहरों में झूल रहे हैं, बहुत ऊँचा उठ रहे हैं लेकिन बाद में जब वह नशा रोजमर्रा की बात हो जाती है तो हम खुद ही उससे नफरत करने लगते हैं।

आप जानते हैं कि आजकल दुनियां की सरकारों ने बहुत से नियम और सीमाएं तय की हैं। सरकार नशीले पदार्थों की इस समस्या को रोकना चाहती हैं। बहुत से देशों में नशीले पदार्थों का लेन-देन करने वालों को फाँसी की सजा भी हो जाती है।

नशीले पदार्थों का सेवन करने से हम अपने शरीर को नुकसान पहुँचाते हैं और अपने देश का नाम भी खराब करते हैं। अगर आप

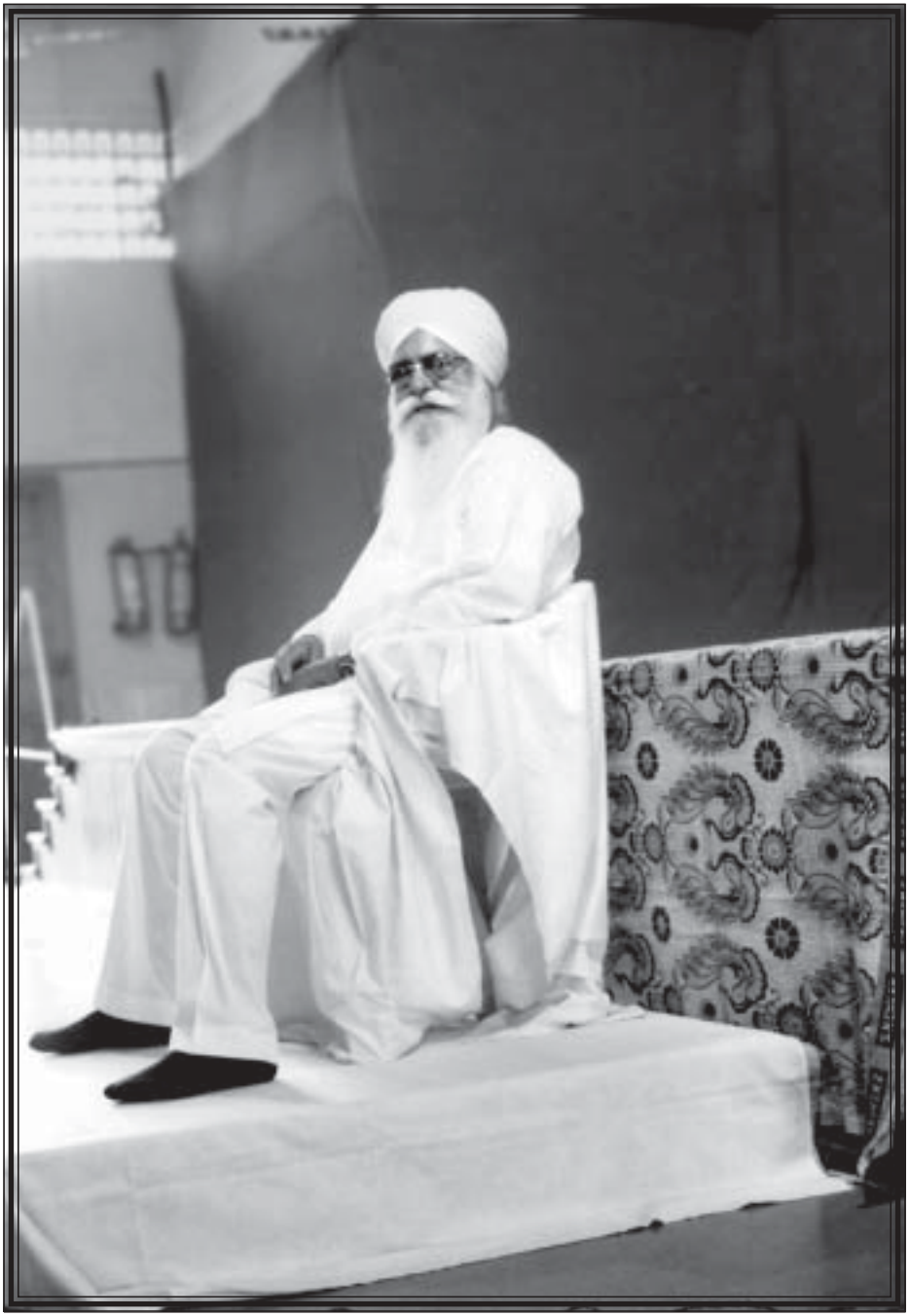

किसी भी तरह के नशीले पदार्थ का सेवन करते हैं तो आपके बच्चे भी वैसा ही करेंगे, इससे एक नई पीढ़ी नशे से ग्रस्त पैदा होगी।

हमें अपने देश के प्रति वफादार रहना चाहिए और अपने देश के नाम के लिए नशों को छोड़ देना चाहिए। नशे की आदत हमारे शरीर और हमारे देश के चरित्र को खराब कर सकती है।

नशे से मेरा मतलब सिर्फ शराब पीने से नहीं है। नशा जैसे अफीम, गांजा या किसी भी तरह के ड्रग्स जिसके आप आदी हो जाएं जो आपको झूठा नशा दे कोशिश करके आपको ऐसे नशे छोड़ देने चाहिए। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि चाहे कोई जवान या बूढ़ा इंसान है। अगर कोई नशा करके मेरे पास आता है तो मुझे समझने में देर नहीं लगती कि यह इंसान नशे में है या यह इंसान नशीले पदार्थों का सेवन करता है।

बाबा बिशनदास जी से मुझे 'दो-शब्द' का भेद मिला है। आप हमेशा कहा करते थे अगर हम किसी नशे के आदी हो जाते हैं तो सबसे पहले हम अपना धन बर्बाद करते हैं और अपना शरीर खराब करते हैं। नशे हमारे परिवार को बदनामी देते हैं। हम अपने देश, समाज और परिवार के अपमान का कारण बनते हैं। जो व्यक्ति किसी भी तरह के नशे से ग्रस्त है उसमें और एक गधे में कोई फर्क नहीं। जब आप किसी भी चीज़ के नशे में होते हैं तो आपको पता नहीं होता कि आप क्या कह रहे हैं और दूसरे लोगों पर उसका क्या असर पड़ेगा?

आप एक गधे की छोटी की कहानी भी बताया करते थे। एक गधा तम्बाकू के खेत में घास तोड़ने की कोशिश कर रहा था। वह गधा तम्बाकू की सुंदर पत्तियों को छू भी नहीं रहा था। वहाँ किसी ने उससे पूछा, ''ओ मिस्टर गधे! तुम इस छोटी घास को तोड़ रहे हो, इन बड़ी पत्तियों को क्यों नहीं खा रहे?'' गधे ने कहा, ''मैंने सुना है कि जो

तम्बाकू का इस्तेमाल करते हैं वे अगले जन्म में गधे ही बनते हैं। मैं तो पहले ही गधा हूँ फिर गधा बनकर वापिस नहीं आना चाहता।''

मेरे पास एक अमीर आदमी आया करता था वह शराब पीने का आदी था और शराब छोड़ना चाहता था। एक बार वह मेरे पास आकर बोला, ''मुझे शराब की एक बुरी बात बताएं?'' वह मेरी बताई गई शराब की बुराईयों को समझा नहीं तो मैंने उससे कहा, ''मैं तुम्हारे आगे कबीर साहब का एक दोहा रखता हूँ।'' कबीर साहब अपनी बानी में कहते हैं, ''ऐ समझदार लोगो! शराब की बुराई बताने की जरूरत नहीं, शराब इंसान को हैवान बना देती है।''

जब मैं उससे बात करता कि वह शराब पीकर अपना पैसा बर्बाद कर रहा है तो वह कहता, ''मैं एक अमीर आदमी हूँ और पैसा कोई मायने नहीं रखता।'' बाद में बहुत ज्यादा शराब पीने से उसके फेफड़ों में कोई बीमारी हो गई तो उसे शराब छोड़नी पड़ी फिर वह सतसंग में आया और उसने इस राह पर चलना शुरू किया।

आज के समय में हम सन्त-महात्मा की शिक्षाओं को भूलते जा रहे हैं। इस बारे में कहने के लिए बहुत कुछ है और आपने पहले भी बहुत कुछ सुना है कि नशे या ड्रग्स आदि के बारे में सन्त क्या शिक्षा देते हैं। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

पोस्त अफीम भांग उतर जाए प्रभात।
नाम खुमारी नानका चढ़ी रहे दिन रात।

चरस, गाँजा आदि नशे की चीज़ें एक दो दिन के लिए ही नशा देती है अगर आप 'नाम' का नशा चख लें तो वह कही नहीं जाएगा आपके साथ ही रहेगा। आपको नाम मिला हुआ है अगर आप नशा करना चाहते हैं तो मेहनत करके अंदर जाएं और अपनी आत्मा को नाम का नशा दें, जिससे आपकी आत्मा दिन-रात नाम का आनन्द ले सके।

आखिर में मैं आपको एक सलाह देना चाहता हूँ अगर आप अपने आपसे प्यार करते हैं, अपनी सेहत से प्यार करते हैं और जीवन में आगे बढ़ना चाहते हैं तो आपको हर तरह के नशे और बुरी आदतें छोड़ देनी चाहिए। आपको पछताना नहीं चाहिए और अपना मन बनाना चाहिए कि आप इन बुरी आदतों को छोड़ देंगे।

एक प्रेमी: *अगर किसी प्रेमी को शराब पीने की आदत है तो हम उसकी इस आदत को बदलने के लिए क्या कर सकते हैं?*

सन्त जी: आप उसे प्यार से सलाह दें कि नशा करने वालों की क्या हालत होती है। आपने ज्यादातर ऐसे लोग देखे होंगे जिन्हें शराब, गांजा या कोई और नशीले पदार्थ की आदत होती है, कई बार उनके फेफड़े काम करना बंद कर देते हैं। इनका बुरा प्रभाव दिमाग और उनके मन पर पड़ता है; उनकी सोचने की शक्ति भी कम हो जाती है।

आजकल शराब की बोतल पर लिखा होता है कि यह जहर है। यह पढ़ने के बाद भी इंसान इस जहर को पीना चाहता है।

मैंने संगरूर के राज हाई स्कूल से ज्ञानी पास की वहाँ मेरे एक अध्यापक थे जो शराब पीने के बहुत खिलाफ थे। उन्होंने एक कार्टून बनाया जिसमें एक पेड़ था, जिसे वे पापों का पेड़ कहते थे। उस पेड़ की जड़ में उन्होंने एक शराब की बोतल दिखाई थी और उस पेड़ पर लगे हुए फल को पैसे और सम्मान का नुकसान कहा।

हिन्दुस्तान में हम आमतौर पर लोगों को शराब पीते हुए देखते हैं। वे ज्यादा शराब पीकर उल्टी कर देते हैं, उस उल्टी को कुत्ते चाट जाते हैं फिर वही कुत्ते इंसान के चेहरे को चाटते हैं जो पीकर वहाँ पड़ा होता है। पियक्कड़ो की ऐसी हालत देखकर कौन पीना चाहेगा?

गुरु नानकदेव जी कहते हैं, ''शराब हमारी विवेक बुद्धि को गधे जैसा बना देती है। शराब पीने वाले के गधे की तरह लंबे कान और पूँछ नहीं होती लेकिन पीने वाले और गधे में कोई फर्क नहीं होता।''

गुरु नानक साहब अपनी बानी में लिखते हैं, ''अगर खून की एक बूंद हमारे कपड़ों पर गिर जाए तो कपड़े गंदे हो जाते हैं। जो हमेशा इस खून को पीते हैं, वे कैसे पवित्र रह सकते हैं ?''

गुरु गोबिंद सिंह जी अपनी बानी में लिखते है, ''शराब पीने वालों की सात पीढ़ियां नष्ट हो जाती हैं क्योंकि एक के बाद दूसरी पीढ़ी को शराब पीने की आदत पड़ जाती है और अंत में सारा परिवार शराब पीना शुरू कर देता है।''

एक बार किसी ने कबीर साहब को नशीले पदार्थों के सेवन पर रोशनी डालने के लिए कहा। कबीर साहब कहते हैं, ''मैं आपको इतने सारे नशीले पदार्थों के बारे में क्या बताऊँ, मैं आपको केवल एक नशीले पदार्थ शराब की विशेषता बताता हूँ कि शराब बुद्धिमान इंसान को जानवर बना देती है और उसकी जेब से पैसे भी निकाल लेती है।''

आजकल सरकार ने बहुत सख्त कदम उठाए हैं और सख्त नियम और निर्देश लागू किए हैं कि अगर कोई ड्रग्स या नशीले पदार्थों के लेन-देन में पकड़ा गया तो उसे सख्त से सख्त सजा दी जाएगी।

पंजाब में दमदमा एक तीर्थ स्थान है। मैं जब आर्मी में था तो मेरी वहाँ पोस्टिंग हुई और हमें पियक्कड़ों को पकड़ने की ड्यूटी मिली। हम पियक्कड़ों को शर्मिन्दा करने के लिए सबक सिखाते। हम उन्हें पैरों से पकड़ लेते और हाथों के सहारे उनसे पूरे शहर का चक्कर लगवाते। दूसरे तीर्थ यात्रियों को दिखाते कि अगर आप भी इस पवित्र स्थान पर शराब पिएंगे तो आपको भी ऐसी ही सज़ा मिलेगी। उन शराबियों ने शराब पीकर अपने पैसे बर्बाद किए और उन्हें पूरा दिन इस तरह की सजा मिली। आखिर में वे अपना पैसा बर्बाद करके, बेइज्ज़ती करवाकर अपने घरों को वापिस चले गए।

मैं तो यह कहूँगा कि जो नशे के आदी हैं असल में उन्हें अपने पिछले जन्मों के बुरे कर्मों का फल मिल रहा है। उनका परिवार वालों से स्वाभाविक रिश्ता नहीं रहता; उनकी सेहत भी अच्छी नहीं रहती। वे यह भी नहीं सोच सकते कि वे अपने पैसों का बहुत नुकसान कर रहे हैं। जो नशीले पदार्थों के आदी नहीं होते उनकी सेहत अच्छी रहती है। उनकी इज्जत होती है, वे अपने परिवार में अच्छे माने जाते हैं और पड़ोस में भी उनका नाम होता है।

मैं पिछली बार लंदन गया तो मैंने वहाँ एक पोस्टर देखा जो हिन्दुस्तान से आए हुए एक जगत सिंह के बारे में बता रहा था कि यह दिन-रात शराब पीता था। शराब पीने से इसके फेफड़े खराब हो गए और जगत सिंह ने अपने आपको शराब के हवाले कर दिया।

अगर आपके किसी रिश्तेदार या दोस्त को यह बुरी आदत है तो आप उससे लड़े नहीं। जब उसने नशा न किया हो तो आप उसे प्यार से

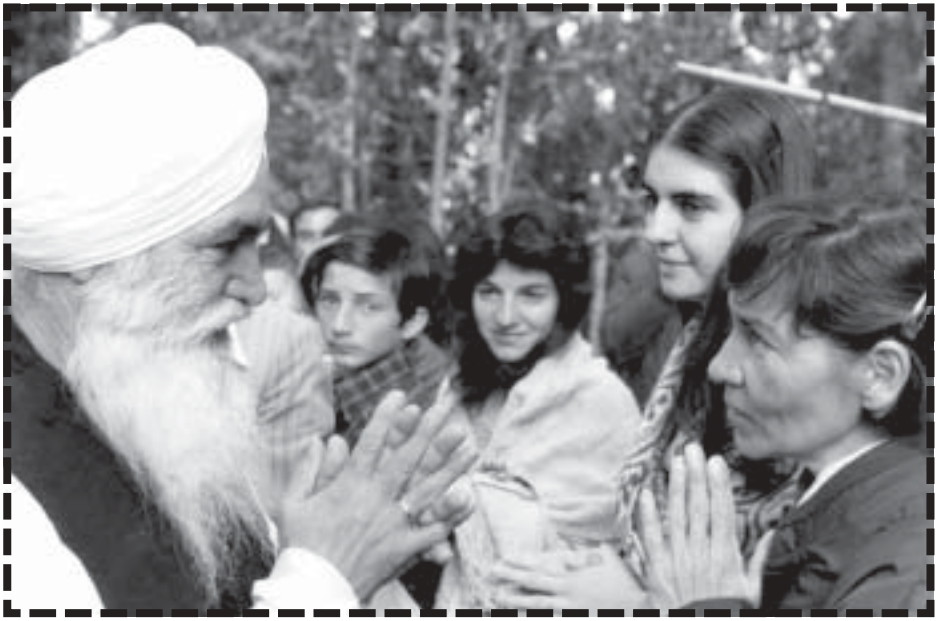

नशे की बुराईयों के बारे में समझाएं अगर आप उसे उस समय मना करेंगे जब उसने नशा किया हुआ है तो वह आपकी बात नहीं सुनेगा और आपके खिलाफ हो जाएगा।

गुरु नानक साहब कहते हैं, ''आपको शराब से बचना चाहिए शराब पीने से बुद्धि खराब हो जाती है और आपको आपसे दूर ले जाती है। 'नाम' की शराब आपको हमेशा जीवित और तरोताजा रखती है।''

सभी महात्माओं ने नशीले पदार्थों से बचने के लिए जोर दिया है। सन्त-सतगुरु हम पर कोई जोर जबरदस्ती नहीं करते। वे हमें प्यार से सतसंग द्वारा समझाते हैं अगर आप एक-एक करके बुरी आदतें छोड़ दें और सतसंग में कहे गए शब्दों के अनुसार जीवन बिताएं और 'नाम' का सिमरन करें तो आप जिन बुरी आदतों में फँसे हैं आपको एक-एक करके उन सबसे छुटकारा मिल जाएगा।

***

धन्य अजायब

गुरु प्यारी साध-संगत,

16 पी.एस. आश्रम में अगले सतसंग का कार्यक्रम 31 मार्च, 1 अप्रैल व 2 अप्रैल - 2012 का है। आप सब संगत के चरणों में निवेदन है कि सतसंग में पहुँचकर सन्तवचनों से लाभ उठाकर अपना जीवन सफल बनाएं।

सन्तबानी आश्रम,

गाँव व डाकखाना - 16 पी.एस. वाया - मुकलावा

तहसील - रायसिंह नगर - 335 039

जिला - श्री गंगा नगर (राजस्थान)